Have you heard of the Four Spiritual Laws?

क्या आप चार आध्यात्मिक नियम जानते है ?

Just as there are physical laws that govern the physical universe, so are there spiritual laws which govern your relationship with God.

1 LAW ONE

GOD **LOVES** YOU AND OFFERS A WONDERFUL **PLAN** FOR YOUR LIFE.

(References contained in this booklet should be read in context from the Bible whenever possible)

GOD'S LOVE

"God so loved the world that He gave His one and only Son, that whoever believes in Him shall not perish, but have eternal life." (John 3:16)

GOD'S PLAN

[Christ speaking] *"I came that they might have life, and might have it abundantly"* [that it might be full and meaningful]. *(John 10:10)*

Why is it that most people are not experiencing the abundant life? Because…

2 LAW TWO

PEOPLE ARE **SINFUL** AND **SEPARATED** FROM GOD SO WE CANNOT KNOW AND EXPERIENCE GOD'S LOVE AND PLAN FOR OUR LIFE.

PEOPLE ARE SINFUL

"All have sinned and fall short of God's glorious standard." (Romans 3:23)

PEOPLE ARE SEPARATED

We were created to have a personal relationship with God, but by our own choice and self-will we have gone our own independent way and that relationship has been broken. This self-will, often seen as an attitude of active rebellion towards God or a lack of interest in Him, is an evidence of what the Bible calls sin.

जिस प्रकार भौतिक नियम है जो भौतिक संसार को नियंत्रित करते है, उसी प्रकार आध्यात्मिक नियम भी है, जो परमेश्वर के साथ आपके संबंध को नियंत्रित करते है।

1 नियम **ऐक**

परमेश्वर आपको प्रेम करते है, और आपके जीवन के लिए उनकी अद्भुत योजना है।

(इस होम पेज में दिये गए प्रसंग जहाँ तक संभव हो बाइबल में से पढ़े)

परमेश्वर का प्रेम

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई विश्वास करें व नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्न 3:16)

परमेश्वर की योजना

(यीशु ने कहाँ) मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ। (ताकि उसमें संपूर्णता योजना हो - यूहन्ना 10:10)

क्या कारण है कि अधिक लोग बहुतायत के जीवन का अनुभव नही करते ? क्योंकि..

2 नियम **दो**

मनुष्य ने पाप किया और वह परमेश्वर से पृथक हो चुका है, इसलिए वह परमेश्वर के प्रेम तथा अपने जीवन के लिए उनकी योजना को न जान सकता है और न ही अनुभव कर सकता है।

मनुष्य पापी है

इसलिए की सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। (रोमियों 3:23)

मनुष्य अलग हो चुका है

मनुष्य को इसलिए रचा गया कि वह परमेश्वर की संगति में रहें, परन्तु अपनी ज़िद व स्वेच्छा के कारण उसने अपनी स्वतंत्रता से इच्छा पूरी करना चुन लिया और उसका परमेश्वर से संबंध टूट गया। यह स्वेच्छा जो विरोध अथवा उपेक्षा के रुप में प्रगट होती है, बाइबल में लिखे पाप का यह प्रमाण है।

PEOPLE ARE SEPARATED FROM GOD
"The wages of sin is death" [spiritual separation from God]. *(Romans 6:23)*

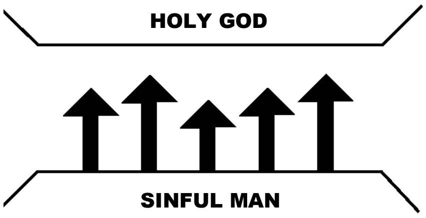

This picture illustrates that God is holy and people are sinful. A great gap separates the two. The arrows illustrate that people are continually trying to reach God and the abundant life through their own efforts, such as a good life, philosophy, or religion – but they always fail.

The third law explains the only way to bridge this gap…

3 LAW THREE

JESUS CHRIST IS GOD'S **ONLY** PROVISION FOR OUR SIN. THROUGH HIM YOU CAN KNOW AND EXPERIENCE GOD'S LOVE AND PLAN FOR YOUR LIFE.

HE DIED IN OUR PLACE
"God demonstrates His own love towards us, in that while we were yet sinners, Christ died for us." (Romans 5:8)

HE ROSE FROM THE DEAD
"Christ died for our sins…He was buried…He was raised on the third day, according to the Scriptures…He appeared to Peter, then to the twelve. After that He appeared to more than five hundred…" (1 Corinthians 15:3-6)

HE IS THE ONLY WAY TO GOD
"Jesus said to him, 'I am the way, and the truth, and the life; no one comes to the Father, but through Me'." (John 14:6)

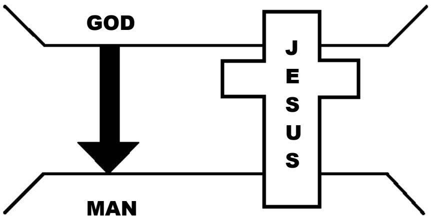

This picture illustrates that God has bridged the gap which separates us from Him by sending His Son, Jesus Christ, to die on the cross in our place to pay the penalty for our sins.

It is not enough just to know these three laws…

मनुष्य पृथक है
क्योंकि पाप का फल तो मृत्यु है - परमेश्वर से आध्यात्मिक अलगाव।(रोमियों 6:23)

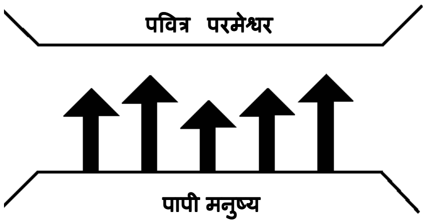

यह चित्र यह दर्शाते है कि परमेश्वर पवित्र और मनुष्य पापी है। परमेश्वर से अलग होने के कुछ परिणाम - एक विशाल खाइ दोनों को पृथक करती है। मनुष्य अपने अच्छे कर्मो, सिद्धान्तों व दर्शनों इत्यदि के माध्यम से अनन्त जीवन तक पहुँचने के लिए सतत कोशिश करता है परन्तु उसकी कोशिश निष्फल ठहरती है।

मनुष्य के इस पवित्र दुवीधा का एकमात्र हल तीसरा नियम देता है.....

3 नियम तीन

यीशु मसीह ही मनुष्य के उद्धार के लिए परमेश्वर से दिया हुआ एकमात्र साधन है। उनके द्वारा आप परमेश्वर के प्रेम व उनकी जो आपके जीवन के लिए योजना है उसे जान तथा अनुभव कर सकते है।

वे हमारे लिए मरे
परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है की जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।(रोमियों 5:8)

वे मरे हुओं में से जी भी उठे
मसीह हमारे पापों के लिए मर गए.... वे गाडे गए... और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठे और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिए। फिर पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिए.... । (1 कुरि.15:3-6)

वे ही एक मार्ग है
यीशु ने उन से कहाँ मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नही पहुँच सकता।(यूहन्ना 14:6)

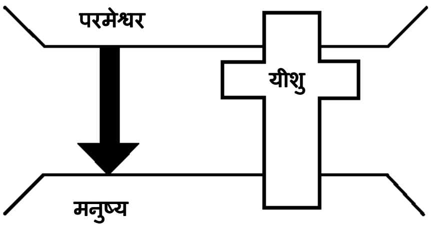

जो खाइ हमें परमेश्वर से पृथक करती थी उसे उन्होंने अपने पुत्र यीशु के द्वारा मिला दिया जो सलीब पर हमारे स्थान पर मरे।

यह तीन नियम जान लेना ही पर्याप्त नही है......

4 LAW FOUR

WE MUST INDIVIDUALLY **RECEIVE** JESUS CHRIST AS SAVIOUR AND LORD; THEN WE CAN KNOW AND EXPERIENCE GOD'S LOVE AND PLAN FOR OUR LIVES.

WE MUST RECEIVE CHRIST

"As many as received Him, to them He gave the right to become children of God, even to those who believe in His name." (John 1:12)

WE RECEIVE CHRIST THROUGH FAITH

"By grace you have been saved through faith; and that not of yourselves, it is the gift of God; not as a result of works, that no one should boast." (Ephesians 2:8,9)

WHEN WE RECEIVE CHRIST THEN WE RECEIVE NEW LIFE (READ JOHN 3:1-8)

WE RECEIVE CHRIST BY PERSONAL INVITATION

[Christ is speaking] *"Behold, I stand at the door and knock; if any one hears My voice and opens the door, I will come in to him." (Revelation 3:20)*

Receiving Christ involves turning to God from self (repentance) and trusting Christ to come into our lives to forgive our sins and to make us what He wants us to be. Just to agree **intellectually** that Jesus Christ is the Son of God and that He died on the cross for our sins is not enough. Nor is it enough to have an **emotional** experience. We receive Jesus Christ by **faith**, as a decision of our **will.**

THESE TWO CIRCLES REPRESENT TWO KINDS OF LIVES:

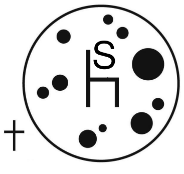

SELF-DIRECTED LIFE

S — Self is on the throne.
• — Interests are directed by self, often resulting in discord and frustration.
† – Jesus Christ is outside the life.

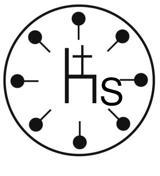

CHRIST-DIRECTED LIFE

† – Jesus Christ is in the life and on the throne.
S – Self is yielding to Christ.
• – Interests are directed by Christ, resulting in harmony with God's plan.

Which circle best describes your life?

Which circle would you like to have represent your life?

The following explains how you can receive Christ:

4 नियम चार

हमें व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता वह प्रभु स्वीकार करना आवश्यक है। तब हम परमेश्वर के प्रेम तथा उनकी हमारे जीवन के लिए योजना जान सकते है।

हमारे लिए यीशु को ग्रहण करना आवश्यक है

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते है।(यूहन्ना 1:12)

हम यीशु को विश्वास द्वारा स्वीकार करते है

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से आपका उद्धार हुआ है, और यह आपकी ओर से नही , वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करें। (इफिसियों 2:8,9)

जब हम मसीह को स्वीकार करते है, तो हम नया जन्म प्राप्त करते है (यूहन्ना ३:1-8 पढ़े)

हम यीशु को स्वीकार करने के लिए व्यक्तिगत निमंत्रण देते है

(यीशु का आपको व्यक्तिगत निमंत्रण) देख मैं द्वारा पर खडा हुआ खटखटाता हूँ, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।(प्रकाशित वाक्य 3:20)

यीशु को स्वीकार करने का अर्थ है अहं की ओर से परमेश्वर की ओर फिरना, विश्वास करना कि यीशु हमारे जीवन में आएंगे, हमारे पापों को क्षमा करेंगे और हम जो चाहेंगे वह हमें बनाएगा। उन के दावो पर बोधिक सहमति देना अथवा भावत्मक अनुभव प्राप्त करना पर्याप्त नही है बल्कि हम यीशु मसीह को क्रिया के स्वरूप में विश्वास के द्वारा प्राप्त करते है।

ये दो वृत दो प्रकार के जीवनों का प्रतिनिधित्व करते

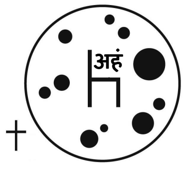

अहं - अहं द्वारा नियंत्रित जीवन

अहं अथवा सीमित में अधीन

अहं द्वारा नियंत्रित रुचियाँ जो कलह व निराशा उत्पन्न करती है

यीशु - जीवन के बाहर।

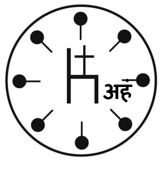

यीशु-यीशु द्वारा नियंत्रित जीवन

जीवन के सिंहासन पर यीशु

अहं - यीशु के अधीन है

असीम परमेश्वर द्वारा नियंत्रित रुचियाँ जिनके परिणाम स्वरूप परमेश्वर की योजना के साथ सामंजस्य।

कौनसे वृत आपके जीवन को दर्शाते है ?

आप अपने जीवन का प्रतिनिधित्व करने के लिए कौनसा वृत लेना चाहेंगे ?

निम्नलिखित वर्णन से ज्ञात होता है कि आप यीशु को कैसे ग्रहण कर सकते है।

YOU CAN RECEIVE CHRIST RIGHT NOW BY FAITH THROUGH PRAYER

(Prayer is talking to God)

God knows your heart and is not so concerned with your words as He is with the attitude of your heart. Here is a suggested prayer:

"Lord Jesus, I need You. Thank You for dying on the cross in my place for my sins. I open the door of my life and receive You as my Saviour and Lord. Thank You for forgiving me of my sins and giving me eternal life. Take control of the throne of my life. Make me the kind of person You want me to be."

Does this prayer express the desire of your heart?

If it does, pray this prayer right now, and Christ will come into your life, as He promised.

आप इसी क्षण यीशु को प्रार्थना के माध्यम से ग्रहण कर सकते है।

(प्रार्थना परमेश्वर के साथ वार्तालाप है)

परमेश्वर आपके मन को जानते है और वह आपके शब्दों में उतनी रुचि नही लेते जितना आपके मन में। निम्नलिखित प्रार्थना का उदाहरण देखिए।

प्रार्थना......प्रभु यीशु मुझे आपकी आवश्यकता है। मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरने के लिए धन्यवाद मैं अपने जीवन के द्वार खोलकर आपको अपने प्रभु और मुक्ति दाता के रूप में स्वीकार करता हूँ। मेरे सारे पापों को क्षमा करने के लिए और मुझे अनन्त जीवन देने के लिए आप को धन्यवाद। मेरे जीवन के सिंहासन पर अपना नियंत्रण रखे जैसा मनुष्य आप मुझे बनाना चाहते है वैसा ही बनाए - आमीन।

क्या यह प्रार्थना आपके हृदय की इच्छा को प्रगट करती है ?

यदी हाँ तो आप इस समय यह प्रार्थना कीजिए व यीशु अपनी

HOW TO KNOW THAT CHRIST IS IN YOUR LIFE

Did you receive Christ into your life? According to His promise in Revelation 3:20, where is Christ right now in relation to you?

Christ said that He would come into your life. Would He mislead you?

On what authority do you know that God has answered your prayer?

The trustworthiness of God Himself and His Word, the Bible (Titus 1:1-2).

आप परमेश्वर को आपने उद्धारकर्ता स्वीकार किया है तो वह अब आप का हृदय में ही है।

आप परमेश्वर की वायदा पडिए प्रकाशितवाक्य 3.20. आप मसीहा के साथ किस रीति से रिश्ता जुडा है ?

आप परमेश्वर को आपने उद्धारकर्ता स्वीकार किया है तो वह अब आप का हृदय में ही है। यीशु ने कहा कि वह आप का जीवन मे आएगा। वह आपको भटकाएगा क्या ?

कैसे जान जाये यीशु आपके जीवन मे है

यीशु सही परमेश्वर है तो, वह मनुष्य के जैसे हम से झूठ नही बोल सकते। (तीतुस 1.1-2) वह विश्वास करने के लिए योग्य परमेश्वर है, वह खुद और उनकी वचन आपका प्रार्थना को जरूर जवाब देगा।

THE BIBLE PROMISES ETERNAL LIFE

"The witness is this, that God has given us eternal life, and this life is in His Son. He who has the Son has the life; he who does not have the Son of God does not have life. These things I have written to you who believe in the name of the Son of God, in order that you may know that you have eternal life."(1 John 5:11-13)

Thank God often that Christ is in your life and that He will never leave you (Hebrews 13:5). You can know on the basis of His promise that Christ lives in you and that you have eternal life from the very moment you invite Him in. He will not deceive you.

An important reminder …

बाइबल का सारे वायदें अनन्त जीवन है

यह गवा ऐसा है, परमेश्वर हमें अनन्त जीवन दीया है, और वो जीवन यीशु में है। जिन में यीशु है उन में जीवन है। जिन में यीशु नही है उन में जीवन नही है। और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके (पुत्र) यीशु में हैं। 1 यूहन्ना 5.11-13.

परमेश्वर की स्तुति हो कि आप जीवन में मसीहा है और वह कभी न छोडेगा (इब्रानियों 13.5)। वायदा के मुताबिक वह आप में वास करता है और आप उसे आप में बुलाने हर समय आप अनन्त जीवन पाते है। वह आपको कभी धोखा न देगा।

एक प्रामुख्य याद दिलाना...

DO NOT DEPEND ON FEELINGS

The promise of God's Word, the Bible – not our feelings – is our authority. The Christian lives by faith (trust) in the trustworthiness of God Himself and His Word. This train diagram illustrates the relationship between fact (God and His Word), faith (our trust in God and His Word), and feeling (the result of our faith and obedience). (John 14:21)

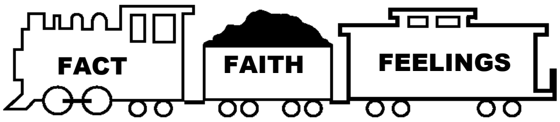

The train will run with or without a passenger car. However, it would be useless to attempt to pull the train by the passenger car. In the same way, as Christians we do not depend on feelings or emotions to decide what is true, but we place our faith (trust) in the trustworthiness of God and the promises of His Word.

आप के भावनाएँ पर निर्भर न करें।

परमेश्वर का वायदाओं और बाइबल के वचनों पर अपना भावनाएँ नही बल्कि अपना अधिकार है। एक मसीहा व्यक्ति विश्वास योग्य परमेश्वर और उनकी वचन के भरोसा से जीते है। यह रेल चित्र हमें सच्छाई (परमेश्वर और उन की वचन), विश्वास(अपना भरोसा परमेश्वर पर और उनकी वचनों पर), और भावनाएँ (विश्वास की परिणाम और आज्ञा पालन करना) यूहन्ना 14.21.

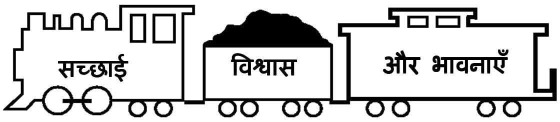

रेल पट्ठो या मागे के बिना रेल नही चल सकती। परन्तु पट्ठो पर खडे हुए रेल गाडी को खींचना भी व्यर्थ है। वैसे ही, मसीह के लोग भी अपने मन भावनाओं और चित्त वृत्ति पर निर्भर नही होना चाहिए परन्तु विश्वास योग्य परमेश्वर और उनकी वायदा के वचन पर अपना विश्वास करने के लिए जगा देना चाहिए।

NOW THAT YOU HAVE RECEIVED CHRIST

The moment that you received Christ by faith many things happened, including the following:

1. Christ came into your life. (Revelation 3:20 ; Colossians 1:27)
2. Your sins were forgiven. (Colossians 1:14)
3. You became a child of God. (John 1:12)
4. You began the great adventure for which God created you. (John 10:10; 2 Corinthians 5:17; 1 Thessalonians 5:18)

Can you think of anything more wonderful that could happen to you than receiving Christ? Would you like to thank God in prayer right now for what He has done for you? By thanking God, you demonstrate your faith.

अब आप मसीहा को स्वीकार किया है

विश्वास के मसीहा को स्वीकार करते समय, बहुत कार्य हो सकता है, नीचे दिए गए के साथ।

1. मसीहा आपका जीवन में आया हैं (प्रकाशितवाक्य 3.20, कुलुस्सियों 1.27)
2. आप का पाप सब क्षमा किया गया हैं। (कुलुस्सियों 1:14)
3. आप परमेश्वर के संतान बन चुके हैं (यूहन्ना 1.12)
4. आप अनन्त जीवन पाया हैं। आप सृष्टिकर्ता परमेश्वर का साहस कार्य आरंभ किया है(यूहन्ना 10.10, 2 कुरिन्थियों 5.17, 1 थिस्सलुनिकियों 5.18).

आप सोचिए कि कुछ ऐसा अद्भुत काम हुआ है मसीहा को अपनाने से पहले ? आपका जीवन में किए हुए भलाई के लिए आप अब परमेश्वर को धन्यवाद करना चाहते है ? धन्यवाद करते हुए आपका विश्वास को हमें अवश्य बताइए या निरुपण कीजिए।

SUGGESTIONS FOR CHRISTIAN GROWTH

Spiritual growth results from trusting Jesus Christ. "The righteous man shall live by faith" (Galatians 3:11). A life of faith will enable you to trust God increasingly with every detail of your life, and to practice the following:

1 **G**o to God in prayer daily. (John 15:7)

2 **R**ead God's Word daily (Acts 17:11); begin with the Gospel of John.

3 **O**bey God moment by moment. (John 14:21)

4 **W**itness for Christ by your life and words. (Matthew 4:19; John 15:8)

5 **T**rust God for every detail of your life. (1 Peter 5:7)

6 **H**oly Spirit – allow Him to control and empower your daily life and witness. (Galatians 5:16,17; Acts 1:8)

मसीहा मे उन्नति के लिए सूचनाएँ

यीशु मसीह पर विश्वास करने से आत्मिक उन्नति बढ़ सकते है। धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। (गलातियों 3.11) यह विश्वास जीवन आपको परमेश्वर पर भरोसा बढाते है साथ ही साथ उसे नीचे दिए गए वाक्य पर असर डालते हैं।

1. हर दिन प्रभु की प्रार्थना करें (यूहन्ना 15.7)
2. हर दिन परमेश्वर का वचन पड़े (प्रेरितों के काम 17.11) यूहन्ना सुसमाचार से शुरू करें।
3. हर पल परमेश्वर की आज्ञा पालन करें।
4. आपके जीवन के द्वारा और बोलने के व्दारा गवाही बनना। (मत्ति4.19, यूहन्ना 15.8)
5. आपके हर कोणे में परमेश्वर पर विश्वास करें (1 पतरस 5.7)
6. पवित्र आत्मा – उसे स्वीकार कीजिए कि आपके जीवन में राज्य और नियंत्रन करे और उसे गवा बन सके। (गलातियों 5:16,17 ;प्रेरितों के काम 1:8)

FELLOWSHIP IN A GOOD CHURCH

The Bible tells us the importance of meeting together with other Christians (Hebrews 10:25).

Have you ever watched a fire burning in a fireplace? Several logs together burn brightly. But if you pull one log away from the fire, its flame soon goes out. The same thing happens to us if we do not spend time with other Christians. Attend a church where Christ is talked about and the Bible is taught. Start this week and make plans to attend regularly.

Do you want to tell your experience to others?

एक अच्छी मण्डली की महता

इबानियों 10:25 में हमें आज्ञा दी गई है की हम एक दुसरे की संगति एकथ होना न छोडे ... अधिक लकडिया मिलकर अच्छा जलती है, परन्तृ ठण्डे चुल्हें पर एक अलग निलकर रख देतो आग बुज जाती है. अन्य मसीहियों के साथ भी अपका ऐसा ही सम्बन्ध है. यदि आप किसी मण्डली के साथ नही है, तो किसी निमन्त्रण की सिक्षा ना करे. पहल आप करे व पास के मण्डली, जहाँ मसीह यीशु को सम्मन दिया जाता हो और उसके वचन का प्रचार कि या जाता हो और जहाँ
के पादरी साहब से मिले. ईसी सप्ताह यह काम आरम्भ तथा नियमित रुप से भाग लेने की योंजना बनाईए.

क्या आप आपनी अनुपम खोज अनिय व्यक्तियों में बाटना चाहेगे?

WANT FURTHER HELP?

If you would like help in developing a closer relationship with Jesus Christ, please visit:

- www.hereslife.com/connect
- www.ichristianlife.com
- www.looktojesus.com
- www.growinginchrist.com
- www.basicsteps.org
- www.greatcom.org

This article is also available in many other languages from www.hereslife.com/tracts.

© 1985- 2008 Campus Crusade for Christ Australia A.C.N 002 310 796

HndEng4pWBw0809

अधिक सहायर्ता चाहीए.

परमेश्वर की संगति में रहने केलिए सहायर्ता आव्यसकता होतो नीचे दिए गए वैबसाईट पर जाईए

- www.hereslife.com/connect
- http://in.basicsteps.org
- http://in.growinginchrist.com
- http://jesuswho.org.in